Indian J. Soc. & Pol. 08 (01) :99-100 : 2021 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 January 2021 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

खुसरो–एक इतिहासकार

मनसूर अहमद सिद्दीक़ी[1]
[1]सहायक प्रोफ़ेसर, इतिहास विभाग,जी0 एफ0 कालेज, शाहजहाँपुर, उ0प्र0 भारत

ABSTRACT

मध्यकाल के महान कवि, सूफी, संगीतकार एवं इतिहासकार अमीर खुसरो की रचनाओं मे देश–प्रेम, एकता तथा हमारी अदभुत संस्कृति के जो अनमोल ख़ज़ाने छुपे हैं वह हमारे देश की ऐसी धरोहर है, जिस पर हर भारतीय को सदैव गर्व रहेगा। खुसरो के व्यक्तिव के कई पहलू है तथा हर एक अपने में आकर्षण रखता है। परन्तु इतिहासकार के रूप में उनकी भूमिका अथवा उनकी रचनाओं के ऐतिहासिक मूल्य पर विचार करते समय बडी सावधानी बरतनी पड़ती है।

KEYWORDS: *मध्यकाल, इतिहास लेखन, अमीर खुसरो, सूफी साहित्य*

इतिहास लेखन यूँ भी भारत में देर से आरम्भ हुआ और जो कुछ लिखा गया उसकी समीक्षा यदि आज के आधुनिक सिद्वान्तों पर की जाये तो उस पर बहुत से प्रश्नचिन्ह लग जायेंगे। इसके अतिरिक्त यह भी एक वास्तविकता है कि खुसरो मूल रूप से साहित्यकार थे और वह भी कवि। फारसी भाषा उनके रक्त मे रची–बसी थी। प्रोफ़ेसर हबीब के अनुसार, पद्य उनकी मात्र भाषा है तथा गद्य लेखन मे उन्हें कठिनाई होती थी। कविता की अपनी एक शैली होती है जिसमें प्रांजलता और भाषा सौष्ठव विशेष महत्व रखता है। दूसरी ओर इतिहास लेखन के लिए सरल भाषा उत्तम मानी जाती है। ऐसे वाक्य जिनका एक ही अर्थ निकलता हो तथा वह शब्द जो वास्तविक घटना का बिना घटाये–बढ़ाये विवरण दे, इतिहास लेखन के लिए उपयोगी माने जाते हैं। इस दृष्टि से किसी भी ऐतिहासिक घटना को प्रस्तुत करने के लिए पद्य का कोई भी रूप उपयोगी नहीं हो सकता।ऐतिहासिक दृष्टि से उनकी छह पुस्तकें बहुत महत्वपूर्ण हैं, इनमें केवल एक 'ख़ज़ाइन उल फुतूह' गद्य मे है, शेष पाँच, 'क़िरान–उस–सादैन', 'दवलरानी खिज़र खाँ', 'मिफ़्ताह उल फुतूह', 'नूहे सफ़ैर' तथा 'तुग़लक़ नामा' पद्य के रूप में मिलती है। यह पाँचों मसनवियाँ हैं। इनसे 1285 ई0 से 1325 ई0 तक की घटनाओं की जानकारी मिलती है तथा यह मध्यकालीन भारत के महत्वपूर्ण स्रोतों में सम्मिलित है।

क़िरान–उस–सादैन : अमीर खुसरो की प्रथम वृहद मसनवी है। इसमें सुल्तान मोइज़ुद्दीन क़ैकुबाद की उसके पिता बुग़रा खाँ से सरजू नदी के किनारे हुई भेंट का विवरण है। इस कविता के लिए स्वयं कैकुबाद ने खुसरो से अग्रह किया था। खुसरो पिता व पुत्र की इस ऐतिहासिक भेंट के साक्षी थे। वह कैकुबाद के मुसाहिब थे और उन्हें उसके दरबार में विशेष स्थान प्राप्त था। इस भेंट के समय वह सुल्तान के साथ उसके शिविर में उपस्थित थे।

बल्बन की मृत्यु के पश्चात उसका पौत्र क़ैकुबाद दिल्ली का सुल्तान बना। क़ैकुबाद का पिता बुग़रा खाँ उस समय जीवित था और वह लखनौती के राज्य का स्वामी था, जिसे उसके पिता बल्बन ने उसे दिया था(बरनी, 1969,पृ0195)।

इस भेंट का विस्तृत वर्णन खुसरो ने कैकुबाद के कहने पर 'क़िरान उस सादैन' में किया है (खुसरो,1261,पृ0170)। खुसरो चूँकि उस समय स्वयं उपस्थित थे इसलिए उसने छोटी–छोटी जानकारियाँ दी हैं, परन्तु उसने एक ही पक्ष को सामने रखा है अर्थात कैकुबाद की दृष्टि से ही घटनाओं का विवरण किया है। परन्तु हम खुसरो के आभारी हैं जिसने इस ऐतिहासिक घटना की ऐसी सटीक जानकारी दी। इस मसनवी में इतिहासकार खुसरो एक ओर दिल्ली व उसके निकटवर्ती क्षेत्र का वर्णन देता है तो दूसरी ओर अयोध्या का दृश्य भी दिखाता है। वह पुरानी दिल्ली, दिल्ली की पुरानी जामा मस्जिद एवं तीन घेरों मे बन्द दिल्ली नगर का ब्यान करता है। खुसरो दिल्ली के तीसरे घेरे, नव निर्मित नगर 'केलूगढ़ी'(वही,पृ022) की विशेषताएँ भी बताता है। वह जामा मस्जिद के नौ गुम्बदों और इल्तुतमिश द्वारा बनाये गये हौज़ शमसी की प्रसंसा करता है। अपनी कविता मे खुसरो कैलूगढ़ी मे निर्मित शाही महल का भी वर्णन करता है। इस प्रकार यह मसनवी उस काल की बहुत–सी ऐसी ऐतिहासिक जानकारी देती है जिसके लिए हमारे पास कोई दूसरा स्रोत नही है।

दवलरानी खिज़र खाँ : यह मसनवी गुजरात के राजा करण एवं अलाउद्दीन खिल्जी के पुत्र राजकुमार खिज़र खाँ के प्रेम की कथा है। यह भी स्वयं खिज़र खाँ के आग्रह पर लिखी गई। इनमें जिन घटनाओं का तथा जिस प्रकार वर्णन किया गया है वह इतिहास के अन्य स्रोतों से भिन्न है। इसमें खिज़र खाँ के दवलरानी से विवाह के अतिरिक्त राजकुमार के पतन तथा उसके वध को भी ब्यान किया गया है। परन्तु यह भाग बाद में जोडा गया। खुसरो ने इस मसनवी में ऐसी बहुत सी ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन इस प्रकार से किया है कि प्रायः इतिहासकार जब सुल्तान अलाउद्दीन लिखते हैं तो इन घटनाओं को ब्यान करते समय वह स्वयं के विवरण के स्थान पर खुसरो के सम्बन्धित शेर लिखते हैं।

मिफ़्ताह–उल–फुतूह: जलालुद्दीन फ़ीरोज़ ख़िल्जी के काल में लिखी गई यह मसनवी फ़ीरोज ख़िल्जी की विजयों के वर्णन पर आधारित है। यह मसनवी खुसरो की अन्य मसनवियों की

1: Corresponding Author

तुलना में छोटी है, परन्तु इतिहासकार के दृष्टिकोण से इसकी दो विशेषताएँ महत्वपूर्ण हैं। प्रथम इसकी भाषा सादा व सरल है। खुसरो ने वह शैली अपनायी है जो इतिहास लेखन के लिए उच्च कोटि की मानी जाती है। इस मसनवी की दूसरी विशेषता यह है कि इसमें खुसरो ने घटनाओं को उसी प्रकार प्रस्तुत किया है जैसे कि वह घटीं, अर्थात उनमें कोई भी व्यर्थ अथवा असम्बन्धित बात नहीं है। इसमें फ़ीरोज़ ख़िल्जी की चार विजयों, मलिक छज्जू का विद्रोह एवं उसका दमन, अवध की विजय, मुग़लों की पराजय तथा छायन की विजय का वर्णन इस प्रकार से किया गया है कि यह फ़ीरोज़ खिल्जी के काल का सबसे आधिकारिक स्रोत बन गई है।

नूहे सपहैर : इसका अन्य नाम 'सुल्तान नामा' भी है। यह भी कुत्बुद्दीन मुबारक ख़िल्जी के कहने पर लिखी गई। मुबारक ख़िल्जी ने अपने काल की घटनाओं का काव्यात्मक प्रस्तुतिकरण करने का आग्रह किया और इसके बदले हाथी के बराबर तोलकर सोना देना का अश्वासन दिया। खुसरो, मुबारक ख़िल्जी के तीन पूर्वजों का काव्यात्मक इतिहास प्रस्तुत कर चुका था, उसने बाद की घटनाओं पर आधारित नूहे सपहैर लिखी।इस मसनवी के नौ भाग है। प्रथम भाग में खुसरो मुबारक खिल्जी की प्रशंसा करते हैं, दूसरे में उसके द्वारा बनाये गये भवनों की विस्तृत जानकारी देते हैं तथा दिल्ली की तारीफ करते हैं। तीसरे भाग में भारत के वातावरण, फल फूल, पशु, परिन्दे, भाषा, धार्मिक विचार और उद्योग आदि को विस्तार से ब्यान करते है। वह कहते हैं कि विश्व का कोई देश इन चीजों में भारत की बराबरी नहीं कर सकता। इसी भाग में वारंगल की विजय का वर्णन भी मिलता है। चौथे भाग मे वह शासक, दरबारी तथा जनता को उपदेश देते दिखाई देते हैं। पाँचवें भाग में शिकार तथा जानवरों की चर्चा की गई है। छठा एवं सातवां भाग मुबारक शाह के पुत्र के जन्म और इस अवसर पर होने वाले समाहरोह पर आधारित है। आठवें भाग मे पतझड़ ऋतु तथा नवें में अपनी शायरी एवं फारसी कवियों की प्रशंसा मिलती है।

तुग़लक़नामा : तुग़लकनामा पूर्णतया ऐतिहासिक रचना है। खुसरो ने यह सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लक़ के आग्रह पर लिखी। मुबारक ख़िल्जी के वध तथा खुसरो शाह का राज्य पर अधिकार एवं ग़यासुद्दीन द्वारा खुसरो शाह की पराजय व वध एवं ग़यासुद्दीन के राज्यरोहण की घटनायें ब्यान की गई हैं। इस की विशेषता यह है कि यह अपने काल की बहुत–सी घटनाओं के संदर्भ मे एक मात्र स्रोत है।

ख़ज़ाइन–उल–फ़ुतूह : खुसरो की यह ऐतिहासिक रचना गद्य में है। यह सुल्तान अलाउद्दीन ख़िल्जी के प्रारम्भिक 16 वर्षों का आधिकारिक इतिहास है। इसमें मलिक काफ़ूर के दक्षिण अभियानों की विस्तार से चर्चा की गई है। शाही सेना के पड़ावों, वे किन क्षेत्रों से गुज़री, दुर्गों की घेराबन्दी तथा शस्त्रों आदि को जिस प्रकार खुसरो ने ब्यान किया है उसका उदाहरण कहीं और सरलता से नहीं मिलेगा। इसके अतिरिक्त रणथम्बौर के राजा द्वारा राजमहल कि स्त्रियों के जौहर की परम्परा को भी विस्तार पूर्वक लिखा है। इस पुस्तक मे छोटी–छोटी बातें भी ब्यान हुई हैं, जैसे हाथी से सम्बन्धित बहुत–सी जानकारी या घोड़ो के रंग और उनकी नस्लें। पुस्तक के अन्तिम भाग मे आलाउद्दीन खिल्जी के दरबार का वर्णन है, जो मलिक काफ़ूर के दक्षिण भारत से विजयी लौटने पर लगाया गया था। इन समस्त ऐतिहासिक ग्रन्थों अथवा रचनाओं का अध्ययन करते समय हमें यह ध्यान रखना होगा कि लेखक की कुछ मजबूरियां भी थी। उसके सम्मुख कुछ ऐसे प्रश्न चिन्ह थे जिनका समाधान सरल नहीं था। खुसरो स्वयं अपनी इन सीमाओं को समझते थे और इसको उन्होने स्वीकार भी किया हैं। वह मानते है कि 'क़िरान उस सादैन' शाही आज्ञा के पालन का परिणाम है और इसके बदले सुल्तान ने वह पुरस्कार देने का वादा किया है जो उनको संसार की समस्याओं से छुटकारा दिला देगा(वही पृ0169–170)। परन्तु दूसरी ओर उन्होंने सुल्तान को यह भी बता दिया कि वह जब भी भाषा या कविता के उच्च मानकों के कारण तथ्यों से हटे हैं तो उनकी अन्तरात्मा ने उनकी अलोचना की है। इसीलिये उन्होंने सुल्तान से कहा कि वह वास्तविकता से हटेंगे नहीं। कुछ समय पश्चात उन्होने अपने पुत्र को उपदेश दिया कि वह उनके मार्ग पर न चले क्योंकि उन्होंने तो अपना जीवन कथा–कहानी का ताना–बाना बुनने मे व्यतीत किया है।

खुसरो इतिहासकार होने के साथ–साथ अपने समकालीन सुल्तानों के दरबारों से भी सम्बन्धित थे, उन्होंने दोनो भूमिकायें भलिभाँति निभाईं। प्रोफेसर कोवेल का विचार है कि खुसरो की लेखन–शैली अतिश्योक्ति से भरी है परन्तु ऐतिहासिक तथ्य भी बड़ी हद तक सत्यता से प्रस्तुत किये गये है। वास्तविकता यह है कि खुसरो शासकों तथा दरबारों के जिस घेरे मे क़ैद थे उसने उनके क़लम की सीमाओं को घटा दिया था, जिसकी भरपाई उन्होने सुन्दर शब्दों और भाषा की पेचदार गलियों में अपनी कलम दौड़ाकर की। उन्होंने सलातीन के पक्ष को सामने रखते हुए तथ्यों पर प्रकाश ड़ाला। उनका यह कारनामा कम नहीं है कि बहुत–सी ऐसी घटनायें उनकी रचनाओं में मिलती हैं जो कहीं और स्थान नही पा सकीं। मध्यकालीन भारतीय इतिहास का प्रत्येक छात्र अमीर खुसरो का ऋणी है और सदैव रहेगा।

REFERENCES

उर्दू व फ़रसी की ऐसी वृहद कविता जो किसी एक शीर्षक पर लिखी गई हो

जनरल आफ़ दि ऐशयाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, 1860,

बरनी, ज़ियाउद्दीन (1969) *तारीख़–ए–फ़ीरोज़शाही,* उर्दू तर्जुमा, लाहौर

खुसरो,अमीर (1261) *क़िरान–उस–सादैन,* मतबा हसनी, लखनऊ,